बाइबल टीचर

वर्ष 16 फरवरी 2019 अंक 3

सम्पादकीय

टूटे हुए वायदे

बाइबल में हम गिनती 30:2 में पढ़ते हैं कि ''जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने वा अपने आप को वाचा से बांधने के लिये शपथ खाए तो वह अपना वचन न टाले, जो कुछ उसके मुंह से निकला हो उसके अनुसार वह करे।'' इस सारे अध्याय से हम यही पढ़ते हैं कि यदि किसी व्यक्ति ने कोई वायदा किया है तो उसे पूरा करता उसका कर्त्तव्य है। यदि वह अपने किये वायदे को पूरा नहीं करता तो उसे उसका परिणाम भुगतना पड़ता है। कई बार राजनीति में भी नेताओं द्वारा कई वायदे किये जाते हैं पर वह पूरे नहीं किये जाते।

वायदा करने का अर्थ है मुंह से कही हुई बात को पूरा करना। कई बार एक लड़का और लड़की विवाह से पहिले एक दूसरे से बहुत से वायदे करते हैं परन्तु शीघ्र ही विवाह के पश्चात वायदों को तोड़ दिया जाता है। कई बार परमेश्वर से किये हुए वायदे भी तोड़ दिये जाते हैं। याकूब ने भी मन्नत मानी थी। उसने कहा था, कि ''यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे और मुझे खाने के लिये रोटी और पहिनने के लिये कपड़ा दे। और मैं अपने पिता के घर में कुशल से लौट आऊं तो यहोवा मेरा परमेश्वर ठहरेगा। यह एक बात बड़ी आश्चर्यजनक लगती है कि वह कह रहा है कि यदि यहोवा परमेश्वर मेरे साथ रहेगा तब मैं उसके साथ चलूंगा या वह मेरा परमेश्वर ठहरेगा। हमें इस प्रकार से अपने वायदे को नहीं करना चाहिए कि यदि आप ऐसा करोगे तभी मैं अपने वायदे को पूरा करूंगा।

कई बार वायदे किये तो जाते हैं परन्तु समय के साथ-साथ निभाये नहीं जाते और जल्द ही तोड़ भी दिये जाते हैं। आजकल वायदों को बड़े हलके-फुलके ढंग से लिया जाता है। एक जमाना था जब लोग जुबान से जो बोलते थे वो करके दिखाते थे। आज ऐसा देखने को बहुत कम मिलता है। परमेश्वर चाहता है कि जो हम कहते है या वायदा करते हैं, उसे निभाये। परमेश्वर ने अपने वचन में राजा सुलेमान के द्वारा कहा था, ''जब तू परमेश्वर के लिये मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलम्ब न करना, क्योंकि वह मूर्खों से प्रसन्न नहीं होता। जो मन्नत तूने मानी है उसे पूरी करना। (सभोपदेशक 5:4-5)। और आगे वह कहता है, ''कोई वचन कहकर अपने आप को पाप में न फंसाना और न ईश्वर के दूत के सामने कहना कि यह मुझसे भूल से हो गया (पद : 6) यदि हम वादा निभा नहीं सकते तो हमें वादा करना भी नहीं

नहीं चाहिए। जल्दबाजी में भी कोई वायदा न करें।

कई बार जल्दबाजी में, हम कह तो देते हैं कि हम कर देगें या हो जाएगा परन्तु समय आने पर पीछे हो जाते हैं। हैरोदेश राजा ने भी एक लड़की से वायदा किया था उसने कहा था कि मेरा वचन है तू जो मांगना है मांगले और हम देखते हैं कि उस लड़की ने जब उससे कहा कि मुझे परमेश्वर के जन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काट कर मंगवा दे, तो उसे यह मूर्खता का वचन निभाना पड़ा। इसलिये मित्रो कभी भी जल्दबाजी में बिना समझे वायदे न करें।

आज अपने इस लेख में मैं बताना चाहता हूं कि अपने जीवन में भी हमने बहुत से वायदे किये थे परन्तु क्या हम उन्हें निभा रहे हैं? सबसे पहिले हम विवाह के विषय में देखते हैं। जब आपका विवाह हुआ था चाहे किसी भी रस्म अनुसार हुआ हो परन्तु वायदे तो आपने अवश्य किये होगें। विशेषकर जब एक मसीही लड़के और लड़की की शादी होती है तो जो उनकी शादी करवा रहा है या रस्म पढ़ रहा है वे उन दोनों से कहता है, कि तुम एक दूसरे का साथ सुख और दुख में दोगे और दोनों कहते हैं हां जी/परन्तु थोड़े समय पश्चात आपस में लड़ाई-झगड़ा होने लगता है तथा बात कई बार तलाक तक पहुंच जाती है। आज विवाह के विषय में तथा विवाह को कैसे निभाना है यह शिक्षा नहीं दी जाती। यह भी नहीं बताया जाता कि पति-पत्नी को आपस में किस प्रकार से अपने मसलों को सुलझाना है। माता-पिता तथा सास-ससुर पति-पत्नी के बीच में गलत फहमिया पैदा कर देते हैं। कई बार लोगों के कारण शादियां टूट जाती हैं। परमेश्वर ने विवाह को रचा था। उसने आदम के लिये एक स्त्री को बनाया था जो उसकी सहायक थी। आदम की पसली निकालकर स्त्री को बनाया था। कई लोग अपनी पत्नी की कदर नहीं करते तथा कई उसे बहुत कमज़ोर समझते है। यह इसलिये होता है क्योंकि पुरुष या उसके पति ने जो वायदा किया था वो तोड़ दिया है। विवाह को हलके फुलके ढंग से नहीं लिया जाना चाहिए। अपने विवाह को आदर दें और यही बाइबल कहती है, कि विवाह सब में आदर की बात समझी जाये। (इब्रानियों 13:4)।

दूसरी बात हम यह देखते हैं कि जब लोग बपतिस्मा लेकर सुसमाचार का पालन करते हैं तब हम मसीह के साथ विवाह की तरह जुड़ जाते है। यानी उस कलीसिया के एक अंग बन जाते हैं जो यीशु की दुल्हन है। (इफि. 5:22-28)। जब हम प्रभु यीशु से जुड़ जाते हैं तब हम कुछ वायदों को करते हैं। यह वायदे हमें तोड़ने नहीं चाहिए। प्रेरित पौलुस कहता है, ''मेरे भाईयों, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए कि उस दूसरे के हो जाओ जो मरे हुओं में से जी उठा।'' (रोमियों 7:4)। फिर मसीहीयों को लिखते हुए वह कहता है, ''क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाई मसीह को सौंप दूं। (2 कुरि. 4:2)। जिस दिन आप यीशु के साथ जुड़े थे, उस दिन आपने यीशु से कुछ वायदे किये थे और उन वायदों को आपकी जिम्मेवारी निभाने की हैं। पतरस ने एक बार अपने वायदे को तोड़ दिया था। परन्तु बाद में वह बहुत पछताया और यहां तक कि फूट-फूटकर रोया

भी था। बाइबल में हम पढ़ते हैं, ''पतरस ने उससे कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझसे कभी न मुकरूंगा और ऐसी ही बात सब चेलों ने भी कही थी (यूहन्ना 21:35) आज अनेक मसीही प्रभु के साथ किये हुए वायदे को तोड़ रहे हैं। कुछ ऐसे ही वायदों के विषय में हम देखना चाहेंगे:

कई लोगों ने कहा था कि मैं कभी भी अराधना में जाना बंद नहीं करूंगा। किसी भी रविवार को मैं अराधना मिस नहीं करूंगा। याद करिये जब आपका विवाह मसीह के साथ हुआ था जब आप एक मसीही बने थे। जरा सी छोटी सी बात पर लोग अराधना में नहीं आते। कई लोग बहाने लगाकर अराधना में नहीं आते। इब्रानियों का लेखक मसीहीयों से कहता है, ''और एक दूसरे के साथ हक्ट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो। (इब्रा. 10:25)। एक मसीही होते हुए मेरा यह कर्त्तव्य है कि मैं प्रत्येक अराधना सभा में उपस्थित हूं। मुझे सबसे पहिले अपने जीवन में प्रभु के राज्य और धर्म की खोज करनी है। (मत्ती 6:33)। जब मैं अराधना में नहीं जाता तब मैं अपने वायदे को तोड़ रहा हूं।

आपने वायदा किया था, प्रभु मैं कभी भी प्रभु भोज को मिस नहीं करूंगा। आज लोग छोटी-छोटी बातों के कारण अपने घरों पर रूक जाते है तथा प्रभु भोज को महत्व नहीं देते। प्रेरित पौलुस ने मसीहीयों को लिखा था ''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते है, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।'' (1 कुरि. 11:26)। जब तक प्रभु यीशु वापस नहीं आ जाता हमें प्रत्येक रविवार को इसमें भाग लेना है जैसे कि पहिली शताब्दी में मसीही किया करते थे। (प्रेरितों 2:42; 20:7)। क्या आपने कभी जान-बूझकर इस वायदे को तोड़ा है?

एक और वायदा आपने बपतिस्मा लेने के बाद किया था कि आप मृत्यु तक प्रभु के पीछे चलते रहेंगे तथा आपने जब वायदा कर लिया है तो आप वापस संसार की बुराई को मुड़कर नहीं देखेंगे। क्योंकि प्रभु में आप एक नई सृष्टि बन गये है तथा आपका जीवन बदल गया है। (2 कुरि. 5:17)। जो प्रेम हमने प्रभु से आरंभ में किया था उसे छोड़ना नहीं है। कई बार चर्च में अगुओं के अनुचित व्यवहार के कारण कई सदस्य चले जाते हैं परन्तु हमें उन्हें वापस लाने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रिये मित्र, बपतिस्मा लेने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना है। केवल मसीहीयत में आगे बढ़ना है। बाइबल कहती है, ''क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर उस पवित्र आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी। (2 पतरस 2:21)। इस्त्राएल जाति से परमेश्वर ने कहा था, अपने परमेश्वर के पास वापस आ जा। (होशे 14:1)।

एक और वायदा जो आपने किया था कि मसीही बनने के बाद आप संसार से प्रेम नहीं करेंगे। संसार से प्रेम करने का अर्थ है पाप में फंसना। यूहन्ना कहता है, ''तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो, यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं। (1 यूहन्ना 2:15)। यदि आप कलुस्सियों का तीसरा अध्याय पढ़े तो हम देखेंगे कि मसीहीयों को किस प्रकार से अपने आपको

पाप से बचाना है। प्रेरित कहता है, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।'' (कुल 3:1-2)। जब आप परमेश्वर के राज्य अर्थात उसकी कलीसिया के सदस्य बने थे तो आपका वायदा था कि मैं संसार से प्रेम नहीं रखूंगा। क्या आप आपने वायदे को निभा रहे है? एक दिन दुल्हा यानि यीशु वापस आयेगा और जो उसके प्रति विश्वास योग्य हैं उन्हें वह अपने साथ ले जायेगा।

क्या हम सब एक ही जगह जा रहे है?

सनी डेविड

अकसर यह कहा जाता है, और यह सुनने में आता है, कि इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि चाहे कुछ भी मानो और चाहे कुछ भी विश्वास करो और चाहे कुछ भी करो, अन्त में सब को एक ही जगह जाना है। और यह कथन एक प्रकार से बिल्कुल सच है। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि परमेश्वर की ओर से सब मनुष्यों के लिये एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है। यानि यह सच है, कि हम सब के सब एक दिन एक ही जगह होंगे, चाहे पल भर के लिये ही क्यों न हो, पर होंगे जरूर, और वह स्थान होगा परमेश्वर के न्याय का स्थान। बाइबल में लिखा है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्यायआसन के सामने खुल जाए, कि हम में से हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हो पाए।" (2 कुरिन्थियों 5:10)। सो यह सच है, कि वास्तव में हम सब के सब एक ही जगह जा रहे है, यानि हम सब के सब परमेश्वर के न्याय का सामना करने जा रहे हैं।

पर उस दिन के बाद हम सब एक जगह नहीं रहेंगे। क्योंकि न्याय का वह दिन अलग होने का दिन होगा। उस दिन लोग इस तरह से अलग-अलग किये जाएंगे जैसे भूसे को गेहूं से अलग किया जाता है, और जैसे एक चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि उस दिन वे जिन्होंने भलाई की है जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे। (यूहन्ना 5:28, 29) और प्रभु यीशु ने कहा था, कि वह जीवन, अनंत जीवन होगा, और ऐसे ही वह दण्ड, अनंत दण्ड होगा। (मत्ती 25:46)। परमेश्वर के न्याय का वह दिन एक महान दिन होगा। उस दिन प्रभु यीशु स्वर्ग से आकाश में प्रकट होगा। और सब के सब मरे हुए परमेश्वर की सामर्थ से जी उठेंगे और अमरता में बदल जाएंगे, और ऐसे ही वे जो इस दिन पृथ्वी पर जीवित होंगे ऐसी देह में परिवर्तित हो जाएंगे जो अमर होंगी। और परमेश्वर की इच्छानुसार उस दिन

प्रत्येक जन अपने-अपने कामों के अनुसार या तो अनन्त दण्ड भोगने के लिये नरक में प्रवेश करेगा, या अनन्त जीवन पाने के लिए स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

अपने साहित्य में जिन बातों को हम बार-बार लोगों को बताते हैं, उन बातों का संबंध इसी मुख्य विषय से है। हम लोगों को बताते हैं, कि मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। और हम सब परमेश्वर की ही तरह हमेशा रहेंगे। परमेश्वर हम सब का आत्मिक पिता है। उसे हम सब की चिंता है, क्योंकि वह जानता है, कि हम सब पाप के कारण नरक में प्रवेश करने जा रहे हैं। लेकिन वह हमें स्वर्ग में देखना चाहता है। इसीलिये उसने हमें बताया है, कि हम वास्तव में क्या है; हम पृथ्वी पर कैसे आए हैं; और हम यहां से कहां जा रहे हैं? उसने हमें यह भी बताया है, कि पाप के दण्ड से बचाने के लिये उसने हमारे लिए क्या किया है। परमेश्वर तो वास्तव में यही चाहता है, कि हम सब के सब एक ही जगह पर अर्थात उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। पर उसने अपनी पुस्तक बाइबल में हमें यह भी बताया है, कि ऐसा वास्तव में संभव नहीं है। क्योंकि वह जानता है, कि पृथ्वी पर अधिकतर लोग परमेश्वर की इच्छा पर न चलकर, अपनी या अन्य लोगों की इच्छा पर चल रहे हैं। बाइबल में परमेश्वर ने हमें बताया है, कि "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्याभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्ति-पूजा, टोना, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीला-क्रीड़ा और इनके जैसे। और-और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहले से कह देता हूं, जैसा कि पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न हांगे।" (गलतियों 5:19-21)।

सो जब कि परमेश्वर चाहता है, कि हम सब जब इस पृथ्वी पर से उठाए जाएं तो सब के सब एक ही स्थान पर अर्थात उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। क्योंकि परमेश्वर ने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा, बाइबल में लिखा है, कि उसने सारे जगत के सब लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये अपना एकलौता पुत्र बलिदान कर दिया। (1 यूहन्ना 4:10)। पर कितने लोग आज संसार में है, जिन्होंने परमेश्वर की इस बात को माना है? कितने लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह पर वास्तव में विश्वास करते हैं? वास्तव में यीशु में विश्वास करने का तात्पर्य इस बात से है, कि कितने लोग उस की आज्ञा को मानकर उसकी इच्छा पर चल रहे हैं? न केवल परमेश्वर ने हमें यही बताया है, कि सारी मानवता पाप के दासत्व में गुलाम है, और पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य नरक में प्रवेश करने जा रहा है। पर उसने हमें, अपनी पुस्तक बाइबल में, यह भी बताया है, कि पाप से छुटकारा पाने का उपाय क्या है। और पाप से मुक्ति पाने का वह साधन भी स्वयं परमेश्वर ने ही मनुष्य के लिये उत्पन्न किया है। अर्थात वह स्वयं मनुष्य का रूप धारण करके पृथ्वी पर आया था। वह सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित करने को पृथ्वी पर आया था। उसीने यह योजना बनाई थी कि झूठे दोषों के आधार पर वह पकड़ा जाए, और अपराधी ठहराया जाए, और एक गुनहगार की तरह क्रूस के ऊपर चढ़ाया जाए। क्योंकि यदि ऐसा न होता तो क्या कोई परमेश्वर को दोषी ठहरा सकता था? या क्या कोई परमेश्वर को हानि पहुंचा सकता था? प्रभु यीशु मसीह ने तो स्वयं मुर्दों को जिन्दा किया था। पर, फिर,

उसने खुद को अपने आप ही मौत के हवाले कर दिया था। क्योंकि वह इसी काम करने के लिये स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आया था। वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। उसने अपनी जान दे दी थी, और अपना खून बहा दिया था ताकि उसके द्वारा हम सब अपने-अपने पापों से छुटकारा पाकर स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाएं।

पर क्या हम ने स्वर्ग में जाने के लिये परमेश्वर की बात को माना है? यह सच है, कि, आज हम कई तरह से एक बड़े ही अच्छे समय में रह रहे हैं। बरसों पहले बहुत के आविष्कार किए गए थे, और उनका इस्तेमाल करके आज हम उनसे भरपूर लाभ उठा रहे हैं। आज हमारे पास तरह-तरह की गाड़ियां हैं; हवाई जहाज है। टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन हैं। और इसी प्रकार के बहुत से अन्य उपकरण हैं। पर इन सब का इस्तेमाल करके ही हम इन से लाभ उठाते हैं। ऐसे ही, जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिये किया है, अर्थात हमें पाप से मुक्ति और छुटकारा दिलवाकर स्वर्ग के योग्य बनाने के लिये जो उसने हमारे लिये कुर्बानी दी है, उससे हम केवल तभी लाभान्वित होते हैं जब हम परमेश्वर की बात को मानते हैं। प्रत्येक जन, जो स्वर्ग में जाना चाहता है, उसे चाहिए कि वह परमेश्वर की बात मानकर, उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाएं; और अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले; यानि एक मरे हुए व्यक्ति की समानता पर पानी की कब्र के भीतर गाड़ा जाए और उसमें से बाहर आकर, एक नए मनुष्य की सी चाल चले, अर्थात प्रभु यीशु मसीह के सिखाए आदर्शों पर चलें। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 1 पतरस 2:21-24)।

और जो इंसान ऐसा करता है, वह निश्चित रूप से जानता है, कि पृथ्वी पर के इस जीवन की समाप्ति पर वह कहां जाएगा। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि जो व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह उसके स्वर्ग में प्रवेश करके सर्वदा बना रहेगा।

हम पवित्र आत्मा में क्यों विश्वास करते हैं?

जे. सी. चोट

हम परमेश्वर यीशु तथा पवित्र आत्मा में विश्वास करते हैं। हम मसीहीयों के लिये यह बहुत महत्वपूर्ण है। सारी दुनिया में मेरे बहुत सारे भाई-बहन हैं जो इसमें विश्वास करते हैं। हमारा एक ही विश्वास है क्योंकि हम एक परमेश्वर, प्रभु यीशु तथा पवित्रआत्मा में विश्वास करते हैं। यह सब बातें बाइबल पर आधारित है।

हमारे इस पाठ में हम देखेगें कि हम पवित्र आत्मा में क्यों विश्वास करते हैं? पवित्रआत्मा परमेश्वरत्व में तीसरा व्यक्तित्व है। प्रेरित पौलुस कहता है, ''एक ही देह

है और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास एक ही बपतिस्मा और सबका एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सबके मध्य में, और सब में है।'' (इफिसियो 4:4-6)। फिर लिखा है, ''क्योंकि उसही के द्वारा हम दोनों को एक आत्मा में पिता के पास पहुंच होती है। (इफि. 2:18)। परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तित्व है जिनके विषय में हम मत्ती 3:13-17, में पढ़ते हैं, ''उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यहून्ना कहकर उसे रोकने लगा, कि मुझे तेरे, हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है। यीशु ने उसे यह उत्तर दिया, कि अब तो क्योंकि हमें इस रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। यहां हम देखते हैं कि यीशु का बपतिस्मा हुआ है कबूतर की नाई पवित्रआत्मा आ रहा है और आवाज आती है कि यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम परमेश्वर में, यीशु में विश्वास करते हैं तो हमें पवित्रआत्मा में भी विश्वास करना चाहिए। यूहन्ना कहता है, ''और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है। (1 यहून्ना 5:7)। यहां यीशु की बात हो रही है (यूहन्ना 1:1)।

हम पवित्रआत्मा में इसलिये भी विश्वास करते हैं कि उसका जनम पवित्रआत्मा के द्वारा हुआ था। मरियम को परमेश्वर ने चुना था ताकि यीशु का जन्म उसके द्वारा हो। मत्ती 1:18 में हम पढ़ते हैं, ''अब यीशु मसीह का जनम इस प्रकार से हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इक्ट्ठे होने से पहले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। फिर हम मत्ती 1:20 में पढ़ते हैं, ''जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, हे यूसुफ दाऊद की संतान तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। मरियम ने जब पूछा कि यह कैसे हो सकता है, तब स्वर्गदूत ने उसे उत्तर दिया, कि पवित्रआत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'' (लूका 1:20)।

कई वर्षों तक पवित्रआत्मा ने अपने वचन को कई चुने हुए लोगों के द्वारा दिया। इसीलिये हम पढ़ते है, जैसे कि प्रेरित पौलुस कहता है, ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्सर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाये।'' (2 तीमु. 3:16-17)। यह वचन हमें पापों से स्वतंत्र करता है। (यूहन्ना 8:32)।

हम पवित्रआत्मा में विश्वास करते हैं क्योंकि यीशु तथा प्रेरितों के द्वारा बहुत से

अद्भभुत कार्य करवाये गये। उन्हें आत्मा बहुतायत से दिया गया था। यहून्ना कहता है, ''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा, वह परमेश्वर की बातें कहता है; क्योंकि वह आत्मा नापकर नहीं देता। (यूहन्ना 3:35)। इसका अर्थ यह है कि औरों को पवित्र आत्मा की सामर्थ सीमित रूप से दी गई है।

यीशु ने अपने चेलों से कहा था, उसका राज्य अर्थात कलीसिया सामर्थ के साथ आयेगी इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी कलीसिया को सामर्थ सहित आना था। यीशु ने अपने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की थी कि वह सहायक को भेजेगा। उसने उनसे कहा था कि वह पवित्र आत्मा को भेजेगा। (मरकुस 9:1)। यीशु ने कहा था आत्मा तुम्हें सब बातें याद दिलायेगा। वह उन्हें अन्य भाषा बोलने की सामर्थ देगा (यूहन्ना 15:26)। यह सब उन्होंने आत्मा की अगुपाई से किया था।

प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु गाड़े जाने तथा जी उठने के पश्चात तथा अपने पिता के पास स्वर्ग में जाने के बाद उसने अपने प्रेरितों से कहा था, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामारिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगें। (प्रेरितों 1:8)। तब प्रेरितों 2:1-4 में हम पढ़ते हैं, ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इक्ट्ठे थे और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी-सनसनाहट का शब्द हुआ और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभे फटती हुई दिखाई दी, और उन में से हर एक पर आ ठहरी। और वे सब पवित्रात्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे। (प्रेरितों 2:1-4)। वे सब पवित्र आत्मा से भर गये थे और सारे लोग आश्चर्य कर रहे थे कि प्रेरित अन्य भाषा में बात कर रहे हैं। वे लोग ऐसा भी सोच रहे थे कि प्रेरित शायद नशे में है। परन्तु पतरस ने उनसे कहा कि योएल ने तो इसके विषय में पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि अन्त के दिनों में परमेश्वर अपना आत्मा उण्डेलेगा। आगे हम पढ़ते हैं कि बहुत सारे अद्भभुत कार्य प्रेरितों के हाथों द्वारा होते थे। (प्रेरितों 2:43)। परन्तु बात यह है कि प्रभु ने किस से कहा था कि तुम पवित्र आत्मा की सामर्थ पाओगे? प्रेरितों से वायदा किया था। इसलिये प्रेरितों का बपतिस्मा पवित्रआत्मा से हुआ था, क्योंकि प्रभु ने उनसे इसकी प्रतिज्ञा की थी। जब प्रेरित पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार किया जब 3000 लोगों ने अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 2:38; 40, 47)।

लेकिन प्रेरितों ने कुछ लोगों पर हाथ रखे ताकि वे भी इन अद्भभुत कार्यों को कर सके। (प्रेरितों 6:1-8)। जिन पर हाथ रखे गये थे वे दूसरो के ऊपर हाथ रखकर इस सामर्थ को नहीं दे सकते थे। आज हमारे बीच अपोस्टल या प्रेरित नहीं है जो हाथ रख कर इस सामर्थ को दे सकें। प्रेरितों को यह सामर्थ इसलिये दी गई थी ताकि वे लोगों को यह निश्चय दिला सकें कि उन्हें परमेश्वर ने भेजा है।

हम पढ़ते हैं कि कुरनैलियस एक गैर यहूदी था और परमेश्वर ने यह दिखाने के लिये कि यहूदी और गैर यहूदी में परमेश्वर कोई पक्षपात नहीं करता उसे यह सामर्थ दी थी। उसका वचन कहता है कि, ''परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता, वरन

हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है वह उसे भाता है।'' (प्रेरितों 10:35; प्रेरितों 10:44-47)।

आज लोग परमेश्वर के वचन को सुनकर विश्वास लाकर बपतिस्मा लेते हैं। तथा ऐसा करने पर वे कलीसिया या मण्डली में मिलाये जाते हैं। (प्रेरितों 2:47)। आज जब लोग बपतिस्मा लेते हैं तो वे आश्चर्यक्रम करने के लिये बपतिस्मा नहीं लेते। परन्तु पवित्र आत्मा का हमारे जीवनों में क्या महत्व है? वह किस प्रकार हमारे अंदर वास करता है? जब हम आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेते हैं तो आत्मा वचन के द्वारा हमारी अगुआई करता है। (रोमियों 8:1)। हम यह भी पढ़ते हैं कि ''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, हम परमेश्वर की संतान है। (रोमियों 8:16)।

फिर पौलुस कहता है, ''इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किसी रीति से करनी चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बहार हैं, हमारे लिये बिनती करता है। (रोमियों 8:26)। परमेश्वर का वचन आत्मा की तलवार है। (इफि. 6:17)। बहुत सारी झूठी आत्मायें हैं परन्तु परमेश्वर का आत्मा सत्य का आत्मा है।

जैसे कहा गया कि जब कोई व्यक्ति प्रभु में विश्वास करता है, पापों से मन फिराता है, यीशु का अंगीकार करता है और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेता है, तब परमेश्वर आपका उद्धार करेगा तथा अपने आत्मा द्वारा आपकी अगुवाई करेगा। आपको अपनी कलीसिया में मिलायेगा।

मछलियां पकड़ने के लिये अपने जाल डालो

टिम निकोल्स

लूका रचित सुसमाचार के पांचवें अध्याय में हम पतरस के विश्वास की एक चुनौती भरी घटना के बारे में पढ़ते हैं। सारी रात मेहनत करने और एक भी मछली न पकड़ने पर पतरस थक चुका था और झील के किनारे अपने जालों को धो रहा था।

यीशु आया और पतरस से कहा कि नाव को किनारे से थोड़ा हटा ले चले। तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा।

जब वह बातें कर चुका तो शमौन पतरस से कहा, ''गहरे में ले चल और मछलियां पकड़ने के लिये जाल डालो।'' पतरस थोड़ा हिचकिचाया वह स्वयं एक अनुभवी मछवारा था और सारी रात मेहनत कर चुका था और एक भी मछली न पकड़ी थी। यीशु को यह बात बताने के उपरान्त भी जैसे सब विश्वासी लोगों ने प्रभु का विश्वास किया है पतरस ने तुरन्त प्रभु की आज्ञा मानी और जैसा प्रभु ने कहा एक दम तैयार हो गया। शमौन ने उत्तर दिया, ''हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।'' (लूका 5:5)।

और परिणाम आश्चर्यजनक था। जब उन्होंने ऐसा किया तो बहुत मछलियां घेर लाए और उनके जाल फटने लगे। इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव

पर थे, संकेत किया कि आकर हमारी सहायता करो और उन्होंने आकर दोनों नावें यहां तक भर ली कि वे डूबने लगी। यह देखकर शमौन यीशु के पांव पर गिरा और कहा, ''हे प्रभु मेरे पास से जा क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं।'' तब यीशु ने शमौन से कहा, ''मत डर; अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा।'' और वे नावों को किनारे ले आए और पतरस और उसके साथी ''सब कुछ छोड़ कर यीशु के पीछे हो लिये।''

यद्यपि पतरस ने संदेह किया और अपने जीवन में इस घटना के बाद कई अवसरों पर परिणाम की चिंता किये बिना कार्य किया। वह बाद में मछलियों के बाजाए मनुष्यों को पकड़ने के लिये गया पर वह उस शिक्षा को जो उसने नाव पर सीखी थी कभी न भूला।

लूका ने, प्रेरितों की पुस्तक के दूसरे अध्याय में पतरस के भाषण का वर्णन किया है, जो पतरस ने लोगों की बड़ी भीड़ को दिया, जो पिन्तेकुस्त के पर्व के रोज यरूशलेम में इक्ट्ठी हुई थी।

परमेश्वर ने पतरस और दूसरे प्रेरितों से सुसमाचार का जाल डालने को कहा। पतरस परमेश्वर से बहस कर सकता था कि यह जगह और समय उचित नहीं है। अभी अभी तो इसी स्थान पर उन लोगों ने यीशु को क्रूस की मौत दी थी, माहोल अभी सही नहीं है। परन्तु परमेश्वर की आज्ञा अनुसार पतरस ने सुसमाचार का जाल डाला और वह तीन हजार आत्माओं से भर गया।

प्रेरितों की पुस्तक के दसवें अध्याय में हम पतरस के बारे में पढ़ते हैं जिसको अन्य जातियों के बीच में सुसमाचार का जाल डालने की आज्ञा दी गई थी। यह बात उसके एक सांकेतिक दर्शन द्वारा समझाई गई थी कि समय आ गया था कि अन्य जातियों को भी सुसमाचार सुनाया जाए।

पतरस ने सुसमाचार का जाल डाला और जाल कुरनिलियस और उसके घराने के लोगों से भर गया।

सुसमाचार का जाल जो आज से दो हजार वर्ष पूर्व पतरस द्वारा डाला गया था, वह आज भी उतना ही मजबूत है जितना उस समय था।

क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, क्योंकि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।'' (रोमियों 1:16)

बाद के वर्षों में जब पतरस वृद्ध और परिपक्व हो गया तब उसने यह शब्द लिखे : क्योंकि ''हर एक प्राणी घास के समान है और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है। घास सूख जाती है और फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का वचन युगानयुग स्थिर रहता है।'' (1 पतरस 1:24-25)।

प्राचीन सुसमाचार - वह जाल है।

आज भी हमारे हाथ में वह ही जाल होना चाहिए। इस जाल को संसार-रूपी समुन्द्र में हम डालें। कब? प्रचार के समय ''कि तू वचन का प्रचार कर समय और असमय तैयार रह।'' (2 तीमुथियुस 4:2) कहां? किसके वास्ते? जाल डालने के लिये।

"हर एक जाति और कुल और भाषा और सब लोगों को।" (प्रकाशितवाक्य 14:6)।

जो अविश्वासी हैं वे इसका विरोध करेंगे। वह यह दलिल देंगे कि प्राचीन सुसमाचार आज के आधुनिक युग में काम नहीं करेगा। वे कहेंगे आज का आधुनिक मनुष्य और प्राचीन सुसमाचार की संस्कृति और विचार धाराओं में बहुत अन्तर है। वे आपको उत्साहित करेंगे कि आप जाल में तबदीली लाएं, उसमें फेर बदल करें। परन्तु प्राचीन सुसमाचार स्वर्ग में रचा गया था। यह युगानयुग एक सा ही रहेगा। हमारा प्रभु केवल यह चाहता है कि हम इस जाल को डालें और उसके परिणाम प्रभु के हाथ में छोड़ दे।

यह परमेश्वर का वचन है, हमारा निर्णय क्या होगा?

अनुवादक-भाई फैरल

मसीहियत सच्ची है क्योंकि हर संस्कृति के आरंभिक चेले धार्मिक तौर पर एकजुट थे

रोजर डिक्सन

प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका मनुष्य के बनाए धर्मो के विरूद्ध दिए जाने वाले मजबूत तर्कों में से एक देता है। यदि धर्म मनुष्य के बनाए हुए हैं तो कोई भी मनुष्य आकर उस शिक्षा में जोड़कर उन्हें मानने वालों के बीच फूट डाल सकता है। यदि किसी धर्म के मानने वालों को उस धर्म की शिक्षाएं ईश्वरीय अधिकार से होने की बात नहीं मिलती तो वे उस धर्म के बड़े गुरुओं की बातों पर बंट जाएंगे। कोई भी धर्म जो किसी विशेष संस्कृति से जुड़ा है उसका अकेला पड़ना और उसमें फूट डालना पक्का है। इसका सांस्कृतिक आधार ही इसके विश्व प्रसार को कठिन बना देता है। मनुष्य के बनाए धर्म आमतौर पर संस्कृति से जुड़े होते हैं जिससे वे निकले होते हैं। उनका लगाव सांस्कृतिक है इस कारण ऐसे धर्मो के लिए अन्य संस्कृतियों में फैल पाना सबसे कठिन होता है।

समस्या उस संस्कृति की भी होती है जिससे कोई विशेष धर्म निकला हो। यदि संस्कृति बदल जाती है (और यह सच है कि हर संस्कृति समय के साथ बदलती ही है) तो आमतौर पर धर्म और संस्कृति के अंदर रूढ़िवादियों और उदारवादियों के झगड़े के कारण धर्म अपने आप में बंट जाता है। लूका यह तर्क देता है कि मसीहियत मनुष्यों की संस्कृति से ऊपर है। इसका मतलब यह हुआ है कि मनुष्य की संस्कृति से ऊपर होने के कारण यह संसार की हर संस्कृति के अनुकूल है। यह साबित करने के लिए कि मसीहियत स्वर्ग के एक परमेश्वर का प्रकाशन है जो सारी मनुष्यजाति का पिता है, यह तर्क सबसे ठोस है।

केवल इसलिए कि मसीहियत के बुनियादी नियम और कुछ बुनियादी विश्वास जिन्हें उद्धार पाने के लिये मसीही लोगों को मानना आवश्यक है, एक सुसमाचार के संदेश की सादगी पर आधारित थे, लूका यह साबित करना चाहता था कि मसीहियत परमेश्वर के प्रकाशन से दी गई है। एक सुसमाचार दावा करता है कि वह मनुष्य से

नहीं बल्कि परमेश्वर से निकला है।

चेलों ने एक सुसमाचार चेलों का मुख्य संदेश मनुष्य के पापों के लिए मरने के लिये यीशु का आना, उसका गाड़ा जाना, आशा देने के लिए जी उठाना और परमेश्वर के दाहिने हाथ सब बातों पर राज करना था। मनुष्य के लिए यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में डुबकी के द्वारा इस सुसमाचार को मानना आवश्यक है। प्रेरितों 2:38; 8:12, 32, 10:47; 48; 16:15, 33, 18:8; 22:16)। यीशु दोबारा भी आ रहा है और अब वह जगत का न्याय करेगा (प्रेरितों 17:30, 31)। यीशु दोबारा सबका न्याय करने के लिए आ रहा है इसलिए मनुष्यों के लिए सच्चाई और ईमानदारी से जीवन जीना आवश्यक है (प्रेरितों 24:25)।

यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का संदेश चेलों के प्रचार में रखा बसा है। लूका सुसमाचार की इन मुख्य घटनाओं वाले कई बड़े प्रवचन लिखता है। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन, मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का प्रचार किया (प्रेरितों 2:22-32)। मन्दिर में उसने यही प्रचार किया (प्रेरितों 3:14, 15)। पतरस और यूहन्ना ने महासभा को यही शुभ समाचार सुनाया (प्रेरितों 4:10, 10)। मन्दिर में और घर-घर में प्रेरित यही संदेश सुनाते थे (प्रेरितों 5:42)। सुसमाचार में चेलों के विश्वास और इसे बताने ने उन्हें एकजुट कर दिया।

चेलों का प्रचार था कि यीशु मसीहा है। इस आधार पर कि मसीही लोग यह मानते थे कि यीशु ने मसीहा से संबंधित पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया, लूका उनकी सफाई में लिखता है। प्रेरितों का प्रचार था कि यीशु ही मसीह है (प्रेरितों 5:42)। पौलुस प्रचार करता था कि "मसीह यही है" (प्रेरितों 9:22; 17:3; 8:5)। अपुलोस भी यही प्रचार करता था कि "यीशु ही मसीह है" (प्रेरितों 18 :28)। इस विश्वास पर चेलों के स्टैंड ने उन्हें विश्वासियों की एक देह यानी समूह में एकजुट कर दिया। उन्होंने अपनी एकता को बनाए रखा, क्योंकि उनका विश्वास था कि यीशु ने मसीहा होने की सारी भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया है।

चेले इकट्ठे थे और बुनियादी शिक्षाओं पर एकजुटता दिखाते थे। यीशु के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के बाद प्रेरित यरूशलेम में लोट गए। "ये सब... एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे" (प्रेरितों 1:14)। पिन्तेकुस्त के दिन "वे सब एक जगह इकट्ठे थे" (प्रेरितों 2:1)। बपतिस्मा लेने वाले लोग "प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलीन" रहते थे (प्रेरितों 2:42)। "और सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे में थी" (प्रेरितों 2:44)। "विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन की थी...." (प्रेरितों 4:32)" ...और वे सब एक चित्त होकर सुलेमान के ओसारे में रहते थे" (प्रेरितों 5:12)। सामरियों ने "जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें सुनकर और जो वह चिन्ह् दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया" (प्रेरितों 8:6)। इस बात पर लूका की सफाई बिल्कुल साफ है। चेलों का समाज पूरे रोमी साम्राज्य के भीतर एक समूह के रूप में एकजुट था। मसीही लोग अलग-अलग प्रकार की कई संस्कृतियों से आए थे। परन्तु एक समाचार के द्वारा उन्हें एकजुट कलीसिया में

एक किया गया था।

जब न बदलने वाले और कट्टर यहूदियों ने कलीसिया पर पुराने नियम के नियम थोप कर चेलों की एकजुट संगति को नष्ट करने की कोशिश की तो कलीसिया इस बांटने वाले प्रभाव से पीछा छुड़ाने के लिए खड़ी हो गई। इस कारण यरूशलेम में "प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिए इकट्ठे हुए" (प्रेरितों 15:6)। उन्होंने अन्य जाति कलीसियाओं को यह बताने के लिए कि अन्य जातियों पर खतने की बात थोपने के लिए यरूशलेम से गए लोगों को उन्होंने कोई आज्ञा नहीं दी थी, उन्हें एक पत्र भेजने का निर्णय लिया (प्रेरितों 15:24)। "तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने में से कुछ मनुष्यों को चुनें" ताकि यह पत्र अंताकियों में ले जाएं (प्रेरितों 15:22)। उनमें से एक आदमी का नाम पौलुस था जिसने सभी चेलों के साथ मिलकर परिश्रम किया था।

लूका की पुस्तक में लूका ने पहले ही बुनियादी नैतिक शिक्षाओं के संबंध में थियुफिलिस को लिखा था। प्रेरितों के काम में वह मनुष्य के बनाए धर्मों में पाए जाने वाले विभिन्न विश्वासों के विपरीत कलीसिया के एकजुट करने वाले बुनियादी सिद्धांतों को दिखा रहा था।

लूका उन सबको जो मसीहियत की वैधता पर सवाल उठाते हैं यह तर्क देता रहता है कि यहूदी सताव के विरूद्ध अपने संघर्ष में एक कलीसिया एकजुट थी। कलीसिया संसार को सुसमाचार सुनाने में एकजुट थी। यह उद्धार से संबंधित बुनियादी शिक्षाओं पर एक जुट थी।

सच्चाई से प्यार करो

ई. क्लाउड गार्डनर

सच्चाई को दैनिक जीवन में बदलने का आधार सच्चाई को पूर्णतया स्वीकार कर लेना है।

यह मान लेना आवश्यक है कि धार्मिक रीतियों में और प्रतिदिन के धर्म में सच्चाई अंतिम अधिकार है। सच्चाई मनुष्यजाति के लिए ईश्वरीय ईच्छा की अभिव्यक्ति है।

सच्चाई को समझा जा सकता है, जाना जा सकता है और यह हमारे लिए उपलब्ध है। अज्ञानता या उलझन का समर्थन करके कोई यह दावा नहीं कर सकता कि किसी को विशेष रूप से यह पता नहीं चल सकता कि उद्धार कैसे पाएं, आराधना कैसे करें और परमेश्वर के अनुग्रह से स्वर्ग में जाने के लिए व्यवहार कैसे करें।

"सापेक्षवाद" की स्वीकृति और "हालात पर निर्भर" होने के युग में हमें याद रखना आवश्यक है कि परम सिद्धांत है। परमेश्वर की अवश्यमाननीय बातें हैं जिनमें यीशु ने कहा कि उन्हें करना आवश्यक है। उसने कहा, "तुझे नये सिरे से जन्म लेना आवश्यक है" (यूहन्ना 3:7)। उसने फिर आज्ञा दी "परमेश्वर आत्मा है और अवश्य

है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें" (यूहन्ना 4:24)।

कुछ और "अवश्य" मानने वाली बातें है, पढ़ें प्रेरितों 4:12; 9:6; 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 कुरिन्थियों 3:2; इब्रानियों 11:6; यीशु "सत्य" (यूहन्ना 14:6) है जिसने बताया कि सत्य को जाना जा सकता है जब उसने यह घोषणा की कि "तुम सत्य को जानोगे" (यूहन्ना 8:32)। उसने यह भी कहा कि यदि कोई जानना चाहता या समझने की इच्छा रखे तो वह जान लेगा। "यदि कोई उसकी इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से हैं या मैं अपनी ओर से कहता हूं" (यूहन्ना 7:17)।

कुरनेलियुस में परमेश्वर की इच्छा को जानने की इच्छा थी और उसने इसे पा लिया (देखें प्रेरितों 10:33)। यदि परमेश्वर के वचन को जाना नहीं जा सकता या पर्याप्त रूप में समझा नहीं जा सकता कि उद्धार पाने के लिये हमें क्या करना आवश्यक है तो यह इसलिए कि यह परमेश्वरत्व या ईश्वरीय ईच्छा को स्पष्ट बता नहीं पाया या उसने बताया नहीं। इन दोनों बातों को कौन मानेगा?

लिखित वचन को अस्पष्ट धारणा के साथ नजरअंदाज न करें कि हमें जीवित वचन (यानी यीशु) के पीछे चलना चाहिए। वास्तव में दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। यीशु को स्वीकार करना या नकारना लिखित वचन को स्वीकार करने या नकारने जैसा ही है। हमारे प्रभु ने चेतावनी दी है, "जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वहीं पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा" (यूहन्ना 12:48)।

लिखित वचन सामान्य मार्गदर्शन कहीं बढ़कर है। यह केवल "प्रेम पत्र" नहीं है। पवित्र शास्त्र में बुनियादी सिद्धांत, उदाहरण, कहानियां और आज्ञाओं की भरमार है। सच्चे परमेश्वर (व्यवस्थाविवरण 32:4), सच्चे मसीह (यूहन्ना 14:6), और सच्चाई के आत्मा (यूहन्ना 14:17) ने लोगों को सच्चाई की पुस्तक तैयार करने के लिए सम्पन्न और प्रेरणा दी (देखें 2 पतरस 1:21)। हमें नये नियम को विश्वास और व्यवहार के सम्पूर्ण नियम के रूप में या तो स्वीकार लेना होगा या नकार। इसमें मानने के लिए स्पष्ट आज्ञाएं और उदाहरण हैं। इनसे हम जान सकते हैं कि मसीही कैसे बनें और आराधना कैसे करें और मण्डली को संगठित कैसे करें। यह इंकार करना कि धार्मिक अधिकार सीधी आज्ञाओं से, आवश्यक परिणाम से और प्रेरितों के स्वीकृति उदाहरणों से दिया गया है, व्यक्ति को धर्मशास्त्रीय उलझन में डाल देता है।

जब तक हम अधिकार को जान लेने की शिक्षा नहीं देते तब तक सच्चाई को जीवन में बदलने के लिए प्रोत्साहित करने का कोई लाभ नहीं। नये नियम को अपने ईश्वरीय सिद्धांत के रूप में मानने के योग्य होने के बाद भी हम सच्चाई की शिक्षा और अपनी व्यक्तिगत करीबियों के बीच खाई को बांटने की कोशिश कर सकते हैं। दैनिक जीवन में काम करने और भागीदारी के बिना सच्चाई का विश्वास किसी काम का नहीं। हमें अपनी "शिक्षा और व्यवहार" को एक दूसरे के निकट लाने की कि कोशिश करनी चाहिए क्योंकि यह हमारे लिये भी और दूसरों के लिए भी आवश्यक है जो हम से प्रभावित हो सकते हैं (देखें मत्ती 25:16)।

सच्चाई के प्रति हमारे व्यवहार से ही तय होगा कि हम इसे स्वीकार करते हैं या नकारते हैं। एक प्रचारक एन.बी. हार्डमैन ने अपने सरमन में बड़े अच्छे ढंग से इन विचार को पेश किया है, "किसी भी सच्चाई को ग्रहण करने का आधार यह है कि हमारा उसके प्रति व्यवहार क्या है।" उन्होंने पूछा, "सम्पूर्ण अधिकार वाली पुस्तक के संबंध में आज रात बाइबल के प्रति आपका क्या व्यवहार है? क्या बाइबल केवल सामान्य निर्देशों वाली पुस्तक है जिसमें सामान्य नीति की रूपरेखा दी गई है और पवित्र की गई सहजबुद्धि से सारा काम किया जाता है, या बाइबल इन बातों के विषय में साफ साफ बताती है जो मनुष्य को अंधकार में से परमेश्वर के राज्य में ले जाती है? क्या यह साफ साफ और विस्तार से बताती है कि परमेश्वर के बालक को परमेश्वर पिता की आराधना कैसे करनी चाहिए?"

जे. डी. थॉमस ने लिखा है, "फिर भी आज्ञाओं, उदाहरणों और सही निष्कर्षों का इस्तेमाल कुछ चीजों, विशेषकर उन के संबंध में जिनसे आवश्यक आज्ञापालन का पता चलता है, परमेश्वर की इच्छा को जानने के मान्य ढंग हैं।"

इस संसार में से
(2 कुरिन्थियों 12:1-12)
जेम्स थॉम्पसन

एक और अनुभवः सामर्थ और निर्बलता (12:7-10)

परमेश्वर की सामर्थ की उपस्थिति के लिए और हमारी शिष्यता के वास्तविक होने के लिए आमतौर पर दिए जाने वाले "परिणामों" में से एक यह प्रमाण है जो उन प्रार्थनाओं के लिए दिया जाता है जिनका उत्तर मिल चुका है। कई लोग सुझाव देते हैं कि हम उन निश्चित बातों की ओर ध्यान दिला सकते हैं जो हमारे धर्म ने हमारे लिए की है। प्रार्थना के उत्तर में हमें आम तौर पर बताया जाता है। परमेश्वर आर्थिक सफलता के रास्ते खोलता है और हमें स्वास्थ्य और मन की शांति देना सुनिश्चित करता है। वास्तव में कई घटनाओं में लोगों ने अपने विश्वास की सच्चाई को साबित करने के लिए परिणामों की तुलना की है।

कोई मसीही इस बात से इंकार नहीं करेगा कि परमेश्वर प्रार्थना को सुनता और उत्तर देता है। परन्तु यह संभव है कि हम प्रार्थना को गलत समझें और इसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए जादू का कोई फार्मूला मान लें। अपने चर्म अनुभवों पर घमण्ड करने के साथ अपने आकर्षण में पौलुस के आलोचकों ने प्रार्थना के अद्‌भुत प्रभावों पर भी घमण्ड किया होगा। हमें यह पता नहीं कि उन्होंने क्या दावा किया, पर प्रार्थना के अपने ही जीवन का पौलुस का विवरण यह सुझाव देता है कि वह फिर से उनके घमण्डों से मुकाबले को तैयार है। उन्होंने प्रार्थना का वर्णन ऐसे समय के रूप में किया होगा जब वे एक विशेष प्रकार से परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव पाते हैं।

पौलुस अपनी कहानी का आरंभ अपने जीवन की एक और घटना को याद करता

है जो इसके बिना हमें पता न चलती। वह बताता है कि उसका मसीही जीवन केवल चरम अनुभवों से नहीं बना। उसे अत्याधिक लचीला होने से रोकने के लिए परमेश्वर ने "मेरे शरीर में एक कांटा" भेजा ताकि मैं फूल न जाऊं (12:7)। परमेश्वर उसे स्वर्गलोक की मस्त ऊंचाइयों की पृथ्वी पर पीड़ा की वास्तविकताओं तक ले गया था। वहीं जिसे "उठाया गया" था उसे ही पीड़ा के द्वारा दीन कर दिया गया। यह पीड़ा मस्ती के पल को संतुलन में रखती थी। यद्यपि सुझाए गए फल कई हैं, परन्तु हम नहीं जानते कि पौलुस के "शरीर में कांटा" क्या था। संभावनाओं में या तो बोलने की बाधा (तुलना 10:10) या आंख का रोग (तुलना 4:15) था। आरंभिक कलीसिया में कुछ लोगों का विचार था कि पौलुस की बीमारी मिर्गी की थी। ऐसे अनुमान सम्भवतया व्यर्थ है। हम इतना जानते हैं कि "शरीर में चुबोया गया कांटा" से पौलुस को शारीरिक और भावनात्मक पीड़ा दोनों मिली। "सताना" का अर्थ "घूंसे से मारना" था। आमतौर पर इसका इस्तेमाल तापनों के लिए किया जाता था (तुलना 1 पतरस 2:20)। इसका अर्थ पौलुस के शारीरिक स्वास्थ्य पर सताव का प्रभाव हो सकता है। इस संदर्भ में "शरीर में कांटा" पौलुस की शारीरिक दुर्बलता का एक उदाहरण था, अर्थात् वह सीमा जिससे कई लोग उसे बदनाम करने के लिए काफी समझते थे। "दिमाग की सुनना" के बड़े अनुभवों को अनुमति देना और "बड़े प्रेरितों" (10:12 से) फूल जाना उसके लिए आसान होना था। उसके विपरीत शारीरिक पीड़ा ने उसे उसकी दुर्बलता और परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भरता का स्मरण दिलाया।

पीड़ा का उसकी उस बड़ी विजय की बात बताने के लिए जो प्रार्थना से मिली हम पौलुस की आत्मिक शक्ति की अपेक्षा कर सकते है। वास्तव में इस संदर्भ में हम पौलुस को एक और बड़ी आत्मिक विजय के उदाहरण से जोड़ने की उम्मीद कर रहे हैं। अन्यों ने उन पलों के अपने अर्थ दिए होंगे जब वे बड़ी रूकावटों पर काबू पाने के लिए प्रार्थना के द्वारा योग्य हो गए। परन्तु जो बात 12:7, 8 में हमें चकित करती है वह यह है कि पौलुस ऐसी कोई कहानी नहीं बताता। यदि उसके पाठक उससे आसान समाधानों और प्रार्थना के द्वारा प्रभावशाली सामर्थ की बात बताने की उम्मीद कर रहे थे, तो वे निराश हुए। "इस के विषय में मैंने प्रभु से तीन बार बिनती की, कि मुझ से यह दूर हो जाए" (12:8)। उत्तर पहली या उसकी दूसरी प्रार्थना पर नहीं आया। "तीन बार" प्रार्थना की विशेष तीव्रता का सुझाव देता है (तुलना मरकुस 14:32-39)। जबकि यह कोई त्वरित या जादू वाला उत्तर नहीं है।

"शरीर में कांटा" के संबंध में पौलुस की बिनती का उत्तर कभी उसकी विनती के अनुसार नहीं दिया गया। उसे केवल यही उत्तर मिला कि "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है" (12:9)। वह कमजोर स्वास्थ्य में अपने मिशनरी परिश्रमों को जारी रखने को विवश था। उसने कई बार सोचा होगा कि उसका प्रभाव तभी बड़ सकता है। यदि उसका स्वास्थय बेहतर हो, वह अपने व्यक्तिगत व्यक्तित्व ओर अपने दम से और लोगों को तभी प्रभावित कर सकता है यदि वह बड़ी सामर्थ को दिखा सके। तौभी पौलुस उन प्रार्थनाओं की ओर ध्यान नहीं दिला पाया जिन से परमेश्वर की सामर्थ पर "प्रमाण" दिया गया।

गलातियों 4:13 में पौलुस की कमजोर सेहत का एक और हवाला है जहाँ वह कहता

है "पर तुम जानते हो कि पहले-पहले मैंने अपनी शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया।" हम उस पहले मिशनरी प्रचार की परिस्थितियों को नहीं जानते परन्तु हम इस तथ्य से प्रभावित होते हैं कि गलातियों को कभी सुनने का अवसर न मिलता यदि वह बीमार न होता। परमेश्वर उसे थोड़ी देर के लिए उसे उसकी बीमारी के कारण इस्तेमाल कर पाया था। वह शारीरिक बीमारी पौलुस को रोक नहीं पाई। इसलिए केवल उसकी समयसारणी को बदला और उससे अपनी योजनाओं को बदलवाया।

"शरीर में कांटा" सहने के इस अनुभव के दौरान ही पौलुस ने एक महत्वपूर्ण सबक सीखा। हमारी मसीहियत का "प्रमाण" हमारे चरम अनुभवों में या उन घटनाओं में नहीं जहाँ प्रार्थना ने "काम किया।" यह अनुभव हमें अपनी प्राप्तियों पर घमण्ड करना सिखाते हैं। सच्चा मसीही जानता है कि वह अपने ऊपर नहीं बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर है। 12:9 में "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है।" परमेश्वर पौलुस को उसकी निर्बलता के बावजूद नहीं बल्कि उसकी निर्बलता के कारण इस्तेमाल कर पाया।

भू-मध्य संसार के पूरे इलाके में कलीसियाओं के होने से बढ़कर परमेश्वर की सामर्थ का चिन्ह् नहीं था। ऐसे संसार में जो दिखाई देने वाली आडम्बरी और शारीरिक सामर्थ की सराहना करने वाले संसार में एक अप्रभावशाली व्यक्ति द्वारा स्थापित ये कलीसियाएं इस बात का प्रमाण थी कि परमेश्वर की सामर्थ मनुष्य की निर्बलता के बीच में थीं। यदि इन कलीसियाओं को बनाने वाले में सामर्थ के सामान्य "प्रमाण" थे तो कई लोग संसार में परमेश्वर की सामर्थ के काम करने को देख नहीं पाए थे। उन्होंने निष्कर्ष निकाला होगा कि संसार में मानवीय सामर्थ ही काम कर रही है।

यह बात ध्यान खींचने वाली है कि पौलुस ने इस संदर्भ में अपने ही अनुभव के दो बिल्कुल अलग विवरण रख दिए। एक घटना में अद्भुत आत्मिक सामर्थ के क्षणों की बात थी। दूसरी में एक आत्मिक अगुवे के लिए "परमेश्वर करने वाली असफलता" का वर्णन। पौलुस की सत्यता का "प्रमाण" बाद वाली है, क्योंकि वह अपनी निर्बलता को छोड़ किसी और बात पर घमण्ड नहीं करेगा। 12:5 में उसने कहा कि उसे "ऐसे मनुष्य" पर घमण्ड करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि वह तो केवल अपनी निर्बलता पर घमण्ड करना चाहता था। 12:9 में वह इसी विचार को दोहराता है :' "इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की मुझ पर छाया रहे।"

निर्बलता और सामर्थ (12:10-12)

हमें यह मानना पड़ेगा कि निर्बलता और सामर्थ के लिए पौलुस का ढंग हमारी स्वाभाविक इच्छाओं के विपरीत था। हम तो यह कहना पसंद करेंगे कि "जब मैं निर्बल होता हूं तभी मैं बलवान होता हूं " क्योंकि हमारी संस्कृति का यही मानक है। हम स्वाग्रह पर पुस्तकों के बारे में जानते हैं कि वे इसलिए प्रसिद्ध होती हैं क्योंकि वे सामर्थ के साथ हमारा ध्यान खींचती है। यदि हमारी स्वाभाविक प्रवृत्तियां हमारे मसीही जीवन को प्रभावित करती हैं, तो हम अपनी सेवकाई को इस पहलू में देखेंगे। जब हम किसी सफल सेवक या सफल कलीसिया पर विचार करते हैं तो हम सामर्थ और प्रभाव के प्रतीकों को कभी भी देखेंगे। हम एक ऐसे प्रबंध को प्रोत्साहित कर सकते हैं जहाँ सेवकों और

कलीसिया के अगुओं को उन परिणामों की तुलना करने को विवश किया जाता है जो उनके संसाधन भरपूर होने की ओर संकेत करती हैं। हम यह मानने के प्रलोभन में पड़ सकते हैं कि जब हम हमारे पास सामर्थ के प्रतीक अर्थात भव्य इमारत, आधुनिक सम्मान, सबसे रचनात्मक अधिकारी और बड़े-बड़े सदस्य न हो तब तक हमारी सेवकाई वास्तविक नहीं है। निश्चित रूप से अच्छी सुविधाएं होना और गुणी लोगों का होना उपयुक्त है। परन्तु यदि हम यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ के प्रभावी होने के लिए हमारी सामर्थ का होना आवश्यक है तो हम अपने आपको धोखा देते हैं।

अपने समय के मानकों के अनुसार यीशु और उसके चेले पूरी तरह से शक्तिहीन थे। क्रूस मानवीय निर्बलता का प्रतीक था। परन्तु क्रूस पर उसकी निर्बलता पुनरुत्थान की सामर्थ के लिए अवसर था। पौलुस कहता है, "वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया, तौभी परमेश्वर की सामर्थ से जीवित है" (13:40। उसकी निर्बलता में से परमेश्वर की सामर्थ निकली। वास्तविक शिष्यता में हम इस बात को अनदेखा नहीं कर सकते कि निर्बलता ही सामर्थ है। अपने "शरीर में कांटा" से पौलुस ने सीखा कि परमेश्वर की सामर्थ निर्बलता में ही सिद्ध होती है (12:9)। इसी कारण वह "निर्बलताओं के साथ, अपमानों के साथ, निराशाओं के साथ, सतावों के साथ, कठिनाइयों के साथ" संतुष्ट था। वह निष्कर्ष निकालता है, "...क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं" (12:10)।

सफल सेवकाई की पहचान क्या है? सफल सेवकाई को वहाँ देखा जा सकता है जहाँ क्रूस और पुनरुत्थान के आश्चर्यकर्म को दोहराया जाता है। जब हमारी निर्बलता परमेश्वर की सामर्थ को काम करने का अवसर देती है तो हम सफल कलीसिया बन जाते हैं। 12:10-13 यह प्रभावशाली है कि पौलुस बार-बार उसी निर्बलता का घमण्ड करता है जिसके लिए उसकी आलोचना हुई थी (11:30; 12:5; 9; तुलना 13:4)। उसके आलोचकों ने "असली प्रेरित के लक्षणों" (12:12) को गलत देखा था।

"आदमी के लिए उसके जैसा सहायक" होने का क्या अर्थ है?

बैटी बर्टन चोट

सब प्राणियों की सृष्टि का कार्य पूरा हो जाने के बाद आदम ने हर प्राणी का नाम रखा, "परन्तु आदम के लिए कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके" (उत्पत्ति 2:20)। परमेश्वर ने आदमी को अपने ही स्वरूप पर बनाया, उसे समझ, भावनाएं दी और एक अनन्त आत्मा दी ताकि वह परमेश्वर की सृष्टि से प्रेम रखे और उसके साथ उसका संबंध बना रहे। अब आदमी को भी लगता था कि प्राणियों में से उसके जैसा कोई नहीं है, जिसके साथ मिलकर वह परमेश्वर की अद्‌भुत सृष्टि की प्रशंसा कर सके।

विचार करने वाली बात

आपको क्या लगता है कि इसका क्या अर्थ है कि स्त्री ने पुरुष के लिए "सहायक" बनना था जो उससे "मेल खाता" हो? आदम के सामने जानवर लाकर उसे दिखाए जाने के बाद जब वह उन सब के नाम रख रहा था तो क्या उसे दिखाई दे रहा होगा कि उनमें हर प्रकार के "नर और मादा" हैं? क्या उसे इससे यह समझने में सहायता मिली होगी कि उनमें उसका जोड़ नहीं है? आपको क्या लगता है कि आदम को अकेला महसूस होने देने और एक साथी की आवश्यकता का एहसास होने देने तक परमेश्वर ने इतना समय क्यों लगाया?

वास्तव में परमेश्वर की योजना के अनुसार आदमी के रूप में आदम की रचना अधूरी थी। अकेला रहकर बेशक वह काम तो कर सकता था, जिससे लगे कि उसमें अपने आप में कोई कमी नहीं है पर परमेश्वर को मालूम था कि उसे लैंगिक, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक रूप में पूर्ण होने के लिए एक साथी की आवश्यकता है। सो जब आदम को अकेलापन महसूस हुआ तो परमेश्वर ने उसे गहरी नींद सुला दिया और उसकी पसली में से एक निकाल ली। परमेश्वर ने स्त्री को मिट्टी में से नहीं, बल्कि पुरुष की पसली से बनाया और उसे उसके पास ले आया। आदम ने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है, सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है" (उत्पत्ति 2:23)।

आज संसार में हम उन पुरुषों और उन स्त्रियों के विषय में सुनते हैं जो विवाह नहीं करते और अकेले रहने की प्राथमिकता देते हैं। कुछ लोग विवाह करने के बजाय अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर देते हैं ताकि परमेश्वर उनके मानवीय साथी के न होने की कमी को पूरा कर दे।

कुछ अन्य मामलों में कई बार परिस्थितियां विवाह न करने को विवश कर देती है और और इसके कारणों को मानना ही पड़ता है। परन्तु अधिकतर पुरुष और स्त्रियां मानवीय आवश्यकता को पूरा करने और परिवार बनाने की इच्छा से विवाह करते हैं। पुरुषों को पत्नी के प्रेम और देखभाल की आवश्यकता होती है जो उनके घर को चलाने में सहायता करे। स्त्रियों को पति की सुरक्षा और साथ की आवश्यकता होती है। दोनों की स्वाभाविक आवश्यकता यह है कि वे चाहते हैं कि उनके बाद उनकी संतान हो। मानवीय प्रबंध में यह महत्वपूर्ण आवश्यकताएं परमेश्वर ने ही डाली हैं और इन्हें आसानी से अनदेखा नहीं किया जा सकता।

पुरुष और जानवरों की तुलना में कोई भी स्त्री किसी भी पुरुष "के जैसी" ही मिलेगी, केवल इसलिए कि वह भी मनुष्य है। परन्तु हम जानते हैं कि आमतौर पर कई बार कोई विशेष पुरुष और स्त्री आपस में मेल नहीं खाते हैं। उनके "कदकाठी" में अन्तर हो सकता है। कई बार हम किसी पढ़े-लिखे आदमी का विवाह किसी अनपढ़ स्त्री से होते हुए देखते हैं जिसका संसार में इसके अलावा और कोई उद्देश्य नहीं होता कि केवल जीना है। कई बार हम देखते हैं कि कोई बहुत ही गंभीर और समझदार स्त्री अपने जीवन में बहुत बड़ी भूल कर बैठती है जब वह किसी तंग सोच वाले आदमी को अपना पति बनाना चुन लेती है। यह बहुत ही सोच समझकर विचार करने वाली बात है कि जब जीवन-साथी का चयन करना हो तो दोनों के जीवन के सब पहलुओं

पर विचार किया जाए। आनन्द प्राप्ति के लिए वैसा ही होना आवश्यक है, जैसा परमेश्वर ने चाहा था कि स्त्री और पुरुष "मेल खाते" हो।

स्त्री सहायक कैसे हो सकती है? जैसे पहले भी कहा गया है कि वह तो अपने पति की जीवन भर की साथी है। आरंभ से तो परमेश्वर ने नहीं चाहा था कि तलाक हो। उसकी योजना थी कि "जीवन भर के लिए एक स्त्री के लिए एक पुरुष हो।" इस सच्चाई को और पक्का करते हुए यीशु ने कहा कि "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरंभ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं, इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे" (मत्ती 19:4-6)।

विचार करने वाली बात

तलाक को आज अधिकतर लोगों द्वारा मान्यता दी जाती है। अधिकतर लोग मसीह द्वारा बताई गई पाबंदियों को यह कहकर नकार देते हैं कि यह एक यहूदी - मसीही नियम है जिसे दूसरों पर थोपने का अधिकार किसी को नहीं है, उनके अधीन रहने से इनकार करेंगे। परन्तु, "एक स्त्री के लिए एक पुरुष" तो यहूदी और मसीही नियमों से बहुत पहले का है; और फिर यह नियम नहीं बल्कि एक हकीकत है। स्त्री को पुरुष में से बनाया गया था और दोनों मिलकर एक बनते हैं। यह सृष्टि का यथार्थ है न कि यह कि किसी के मन में आया और उसने इसे नियम बना दिया। माना जाए तो इस सच्चाई के अन्दर यौन सुरक्षा छुपी हुई है क्योंकि विवाह के असली साथी से आज तक किसी को यौन रोग नहीं हुआ है।

जीवन भर के साथी होने के कारण वे एक दूसरे के ज्ञान और समझ में बढ़ेंगे। वे अकेले नहीं बल्कि इकट्ठे, मानवीय आशीष का महत्वपूर्ण भाग बनेंगे। यदि उनकी जोड़ी बिल्कुल मेल खाती है तो जवानी के फैसले करने और चुनौतियों के लिए वे एक-दूसरे की सामर्थ और सहायता बनेंगे। बुढ़ापे की कमजोरी और बीमारी में वे एक-दूसरे का सहारा बनेंगे।

"सहायक जो उससे मेल" खा सके का विचार यह था कि आदमी की खामियों को दूर करने (जैसे मां की भूमिका में), या जीवन के उसके काम और जिम्मेवारियों को पूरा करने के लिए उसकी सहायता करने के योग्य औरत ही है। क्या कोई ऐसा किसान है जिसे फसल को बोने, उसकी रखवाली करने और कटाई करने के लिए अपनी पत्नी और बच्चों की आवश्यकता न हो? कितने ही छोटे व्यापारी और कारोबारी अपना हिसाब-किताब रखने या नये ऑर्डर बुक करने और दुकान चलाने के लिए अपनी पत्नी पर निर्भर होते हैं? नये नियम में अक्विल्ला तम्बू बनाने का काम करता था और उसकी पत्नी प्रिसकिल्ला उसकी सहायता किया करती थी (प्रेरितों 18-2, 3)।

वचन के अनुसार बच्चों को संसार में लाना और उनका पालन-पोषण करना, पति की संभाल करना और घर की देखभाल करना पत्नी का प्रमुख कार्य है। तीतुस को पौलुस ने लिखा है, "जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि घरबार संभाले अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें" (तीतुस 2:4, 5)। तीमुथियुस को आज्ञा मिली कि वह जवान विधवाओं (उन जवान स्त्रियों को भी जिनका अभी विवाह नहीं हुआ) को

आज्ञा दें कि वे "...विवाह करें, और बच्चे जनें और घरबार संभालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दे"। (1 तीमुथियुस 5:14)।

विचार करने वाली बात

वाल्सट्रीट जर्नल के एक लेख में इंडिया पेटन थॉमस ने लिखा, "1960 के दशक में आरंभ होने वाली स्वार्थी संस्कृति ने सुरक्षित घर का मजाक उड़ाकर उसे बिखरे दिया। अब हम नवजात शिशुओं को मालगोदाम में रखकर इस सांस्कृतिक क्रांति के बहतरीन पहलुओं को केवल इसलिए मान रहे हैं ताकि हम उन कोमल सम्पत्तियों को बंटोर सकें।"

"सामाजिक विज्ञान इस बात की पुष्टि करता है कि डे-केयर सेन्टरों तथा ऐसे संस्थानों में पले बड़े बच्चे आमतौर पर भावनात्मक रूप में अपंग और मानसिक रूप में दुर्बल होते हैं।"

पति के परिवार के लिए कमाई करने पर, बच्चों को जन्म देना और उनका पालन-पोषण करना और घर की देखभाल करना, यदि स्त्री इस काम को सही ढंग से करती है तो उसका समय बिल्कुल अच्छा गुजरेगा। कुछ लोग जो स्त्री की जिम्मेदारी के महत्व को समझते नहीं है वे उसके काम को नौकरानी का काम कहकर उसकी कदर कम कर देते हैं। परन्तु परमेश्वर स्त्री को इससे बढ़कर क्या महिमा देता कि वह अपने को आगे की पीढ़ियों के जीवनों तथा आत्माओं को अनन्तकाल के लिए तैयार कर सकती है। जब हम संसार की नैतिकता के संबंध में समस्याओं की ओर ध्यान करते हैं जिसमें बढ़ रही परेशानियां भी शामिल हैं तो हमें पता चलता है कि इस सब का कारण यही है कि स्त्रियों ने घरबार संभालने का काम छोड़ दिया है जिसके कारण घरों के घर तबाह हो रहे हैं। बात यही है, क्योंकि जिस गति से स्त्रियां घर का कामकाज छोड़कर बाहर जाकर आदमी का काम संभाल रही हैं, उतनी ही गति से संसार की समस्याओं में बढ़ोत्तरी हो रही है। इस सब का कारण जो भी हो, स्त्री के लिए और कोई काम कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, परन्तु पत्नी और मां के लिए परमेश्वर की ओर से दिए कार्य को पूरा न करने के कारण घरों के घर बर्वाद हो रहे हैं।

बच्चों की देखभाल और घर में आदमी को "उससे मेल खाती" सहायक बनने के साथ स्त्री को चाहिए कि वह अपने पति के लिए सहायक बनकर रहे। उसे वैसे ही कपड़े पहनने चाहिए जो उसके पति को पसंद हो। उसे चाहिए कि वह अपने पति की सोच के अनुसार अपने आपको ढाल ले ताकि वे अपने संसार और शेष संसार की समस्याओं से परिचित हो। उसे अपने पति की भावनाओं को समझना चाहिए, ताकि उसके जीवन में खुशियां आ सकें। सफल पत्नी अपने पति की पक्की दोस्त और उसकी राजदार होती है।

पत्नी जो "आदमी से मेल खाती है" अपने पति के परिवार के साथ अच्छे संबंध बनाती है, क्योंकि उसे मालूम है कि यदि उसने अपने पति के किसी संबंधी के साथ वैर रखा तो उनके अपने संबंध में दरार पड़ सकती है। हमें "दो कोस चला जाने" की प्रभु यशु की सलाह (मत्ती 5:38-42) परिवार में मानवीय खामियों को दूर करने के लिए बहुत लाभदायक होगी।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि पत्नी अपने पति के साथ आत्मिक सहभागिता भी रखे।

यदि पत्नी और बच्चे घर पर रहें और पति अकेला ही आराधना के लिए जाए तो इससे न तो पत्नी की और न बच्चों की आत्मिक उन्नति होगी। सच तो यह है कि पति की उन्नति भी वैसी नहीं होगी जैसी होनी चाहिए, क्योंकि उसकी अकेले की उन्नति हो रही होगी। परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हर किसी की आत्मिक उन्नति के लिए पूरे परिवार की उन्नति आवश्यक है। जब परिवार के सब लोग आत्मिक मामलों पर आपस में बातचीत करेंगे, पवित्र शास्त्र को पढ़कर उस पर विचार करेंगे, इकट्ठे प्रार्थना करेंगे तो इस सब से वे परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ेंगे।

पतरस प्रेरित ने स्त्रियों को लिखा है, "तुम्हारा शृंगार... छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।" इसके साथ ही पतियों को लिखते हुए वह कहता है, "वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन को वरदान के वारिस है, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं" (1 पतरस 3:4, 7)।

इफिसुस में जब पौलुस ने मसीही स्त्रियों के नाम लिखा है, कि "हे पत्नियों अपने अपने पतियों के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के" (इफिसियों 5:22), तो क्या उसके कहने का अभिप्राय यह था कि आदमी को परमेश्वर की ओर से अधिकार मिला है कि वह स्त्री को पांव की जूती समझे? क्या ये उसके अपने विचार नहीं हो सकते? निश्चय ही, परमेश्वर के कहने का अर्थ यह नहीं है।

विचार करने वाली बात

आपके अपने विवाह में उन ढंगों पर चर्चा करें जिनके द्वारा आप और आपका पति आपके अधीन होने और उसके प्रति आपके आदर के बीच संतुलित बनाए रखते हैं और यह बिना गलती के परिवार के मुखिया के रूप में अपने अधिकार को बनाए हुए हैं।

यह सच है कि स्त्री को अपने पति का आदर करना चाहिए, परन्तु न तो उसके साथ दुर्व्यवहार हो और न वह दुर्व्यवहार करे। घर की निजी आवश्यकताओं के संबंध में और निजी वस्तुओं के संबंध में स्त्री का अनुभव और ज्ञान एसे पति से अधिक गुणी साबित करता है। अन्य बातों के संबंध में मां और घर का प्रबंध करने वाली होने के कारण उसका आदर करना आवश्यक है।

जब कोई निर्णय लेना हो तो पति और पत्नी को चाहिए कि पहले उस पर विचार-विमर्श कर लें ताकि सही निर्णय ले सकें, हो सकता है कि स्त्री पुरुष के निर्णय को अधिक प्रभावित करे, परन्तु वचन में घर की अगुआई करने का अधिकार पति को ही दिया गया है।

यदि पत्नी को लगे कि लोक-व्यवहार, ज्ञान और निर्णय के संबंध में पति को सचमुच उसकी सलाह की आवश्यकता है तो उसका कर्त्तव्य है कि "सहायक" होने के कारण वह अपने विचार बड़े प्रेम और विनम्रता से उसे बताए। स्त्री चाहे कितनी ही ज्ञानवान क्यों न हो और उसका पति चाहे कितना भी गलत क्यों न हो, स्त्री के लिए यह बिल्कुल अच्छी बात नहीं है कि वह अपने पति पर "आज्ञा" चलाए। इस प्रकार व्यवहार करने से न केवल उसका पति अगुआई करने में कमजोर पड़ेगा बल्कि यह परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन भी है। यदि पति अपनी पत्नी की दादागिरी को सहन

करता रहता है तो इससे न केवल उसका नेतृत्व ही कमजोर पड़ेगा बल्कि इससे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन भी होगा। हमें कभी भी यह नहीं भूलना चाहिए कि अंत में हम सब को एक-दूसरे के साथ व्यवहार के लिए परमेश्वर को उत्तर देना है।

पति और पत्नी को एक-दूसरे के साथ कैसे रहना चाहिए, इसका बहुत सुन्दर उदाहरण हमारे प्रभु मसीह और उसकी कलीसिया के विषय में इस प्रकार मिलता है: "...तुम में से हर-एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखें, और पत्नी भी अपने पति का भय माने" (इफिसियों 5:33)।

मसीही व्यक्ति और सरकार

रॉड रदरफोर्ड

क्या मसीही व्यक्ति सरकारी नौकरी कर सकता है? क्या मसीही लोग अपने देश के चुनाव में वोट डाल सकते हैं? क्या मसीही लोग अपने देश के झण्डे को सलामी दे सकते हैं? और क्या वे राष्ट्रीय गीत गा सकते हैं? ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं क्योंकि मसीही लोग जानते हैं कि कुछ राजनेता बेईमान होते हैं और कुछ सरकारी अधिकारी भ्रष्ट । बाइबल क्या कहती है? जब यीशु संसार में था, उस समय उसके देश (इस्राएलद्य पर रोम का शासन था। यहूदी लोग रोमियों से घृणा करते थे। रोमी अधिकारी प्राय: भ्रष्ट और क्रूर होते थे। एक बार फरीसियों ने, जो यीशु को उलझाने की फिराक में रहते थे, उससे पूछा, "केसर को कर देना उचित है या नहीं?" (मत्ती 22:15-28)। यदि यीशु यह कह देता कि कर देना गलत है तो उसे रोमी अधिकारियों ने पकड़ लेना था। यदि वह कहता कि कर देना अच्छा है तो यहूदियों ने उसके पीछे पड़ जाना था। उन फरीसियों को लगा कि उन्होंने यीशु को अपने चक्कर में फंसा लिया है। यीशु ने उनसे कहा कि वे उसे एक रोमी सिक्का दिखाएं। सिक्का हाथ में लेकर उसने उनसे पूछा कि सिक्के पर किसकी मोहर है? उन्होंने उत्तर दिया, "कैसर की।" तब यीशु ने उत्तर दिया, "जो कैसर का है वह केसर को और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो" मत्ती 22:21)।

हर मसीही दो राज्यों का नागरिक होता है, जिसमें एक राज्य तो आत्मिक है जबकि दूसरा सांसारिक। हम मसीह के राज्य के लोग है, जिसे मसीह की कलीसिया कहा जाता है (मत्ती 16:18, 19; कुलुस्सियों 1:13)। इसके अलावा साथ ही हम सांसारिक देश के लोग भी हैं, जैसे कि फ्रांस, चीन, भारत, पाकिस्तान आदि। हमें चाहिए कि जिस भी राज्य में रहते हैं, करने के लिए ड्यूटी दी जाती है। पौलुस प्रेरित के समय में भी रोम का शासन संसार के अधिकतर देशों पर था (प्रेरितों 22:25-29)। नीरों जो कि सबसे भ्रष्ट अधिकारी हुआ है, तब गद्दी पर ही था, जब पौलुस ने लिखा कि "हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे। क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिए डर का कारण है; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी, क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं; और परमेश्वर का सेवक है कि

उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करने वाले को दण्ड दे। इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध के डर से आवश्यक है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है। इसलिए कर भी दो, क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक है, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। इसलिए हर एक का हक चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो" (रोमियों 131:1-7)।

पतरस प्रेरित ने मसीही लोगों को आज्ञा दी, "प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबंध के अधीन में रहो, राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान है। और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए उसके भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बंद कर दो। और अपने आपको स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिए आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर चलो। सबका आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो" (2 पतरस 2:13-17)। कई बार पूछा जाता है कि "यदि कोई सरकार मसीही लोगों को वह करने की आज्ञा दे जो परमेश्वर के नियम के विरूद्ध हो तो क्या करना चाहिए?" यदि मनुष्य के नियम और परमेश्वर के नियम के बीच तकरार आ जाती है तो परमेश्वर ही का नियम माना जाना आवश्यक है। यहूदी अधिकारियों ने प्रेरितों को मसीह का प्रचार करने के कारण गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने उनसे कहा, "क्या हम ने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? तौभी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लोहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो। तब पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्त्तव्य कर्म है" (प्रेरितों 5:28, 29)। हमें परमेश्वर का नियम और मनुष्य का नियम दोनों में कोई तकरार आती है तो मनुष्य की आज्ञा तोड़कर ही परमेश्वर की आज्ञा को मानना आवश्यक है। यही एक समाधान है।

कई लोग कहते हैं कि संसार के अन्य लोग तो सरकारी नौकरी कर सकते हैं, परन्तु मसीही लोग नहीं। बाइबल ऐसा नहीं बताती। सरकारी नौकरी सब लोगों के लिए है। यदि मसीही व्यक्ति के लिए सरकारी नौकरी करना गलत है तो यह सबके लिए गलत है। यदि गैर-मसीही व्यक्ति के लिए सरकारी नोकरी करना उचित है तो मसीही व्यक्ति के लिए भी उतना ही उचित है।

निश्चय ही कुछ अधिकार मिलने पर व्यक्ति उसका दुरुपयोग करने के प्रलोभन में पड़ सकता है। शक्ति का गलत इस्तेमाल करना बुरी बाती है। अधिकार मिलने पर कोई भी बेईमानी से धनवान बनने की परीक्षा में पड़ सकता है। मसीही लोगों को चाहिए कि वे अपने साथियों के साथ ईमानदारी से और नेकनीयति से पेश आएं। व्यापार में भी ऐसा ही होना चाहिए। सरकारों में भी ऐसा ही होना आवश्यक है। क्या मसीही व्यक्ति को कर देने चाहिए? क्या मसीही व्यक्ति अपने देश के झण्डे को सलामी देकर और राष्ट्रीय गीत गाकर देश की प्रशंसा कर सकता है? क्या वह वह चुनाव में वोट डाल सकता है? क्या वह किसी सरकारी या राजनैतिक पद पर लग सकता है? इन सब प्रश्नों का उत्तर है कि "हां" परन्तु एक मसीही के लिए आवश्यक है कि वह परमेश्वर को और उसके राज्य को पहल दे (मत्ती 6:33)। उसके लिए सब बातों में ईमानदारी होना भी आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 8:21)।